International Journal of Humanities and Arts

ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.00
IJHA 2024; 6(1): 29-31
www.humanitiesjournals.net
Received: 20-11-2023
Accepted: 25-12-2023

Vaishali Sharma Mishra
Research Scholar, Department of Music, Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal, Madhya Pradesh, India

Dr. Sudha Dixit
Research Guide and Professor, Department of Music, Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal, Madhya Pradesh, India

Corresponding Author:
Vaishali Sharma Mishra
Research Scholar, Department of Music, Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal, Madhya Pradesh, India

हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल - भक्तिकाल

Vaishali Sharma Mishra and Dr. Sudha Dixit

DOI: https://doi.org/10.33545/26647699.2024.v6.i1a.59

सारांश
भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण काल है। इसकी विशेषताओं के कारण इसे स्वर्णकाल कहा जाता है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि के अंतविरोधों से परिपूर्ण होते हुए भी इस काल में भक्ति की एसी धारा प्रवाहित हुई कि विद्वानों ने एकमत से इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा। इसकाल में भक्ति परक रचनाओं की प्रधानता रही। यह वह काल है जो वैचारिक समृद्धता और कला वैभव के लिए विख्यात रहा है। इस काल में हिन्दी काव्य में किसी एक दृष्टि से नही अपितु अनेंक दृष्टियों से उत्कृष्टता पायी जाती है। यह काल कवि रूपी रत्नों से भरा हुआ था जिन रत्नों की चमक अभी बरकरार हैं। अतः इस काल को स्वर्ण काल कहना उचित ही है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल के बाद आये इस युग को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ युग है जिसको जार्ज गियर्सन ने स्वर्णकाल श्यामसुंदर दास ने स्वर्णयुग आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्तिकाल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण कहा। इस काल का उद्भव वि.स. 1375 से 1700 तक का माना गया है। इस काल में दो धारांए प्रवाहित हुई निर्गुण धारांए सगुण धारांए निर्गुण धारा के प्रवर्तकों ने निराकार भगवान की उपासना पर बल दिया और इसी के विपरीत सगुण धारा के प्रवर्तकों ने साकार ईश्वर की उपासना की।

कूटशब्द : हिन्दी साहित्य, भक्तिकाल, निर्गुण धारांए -सगुण धारांए, स्वर्णयुग।

प्रस्तावना
भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण काल है। इसकी विशेषताओं के कारण इसे स्वर्णकाल कहा जाता है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, दार्षनिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अंतर्विरोधो से परिपूर्ण होते हुए भी इस काल मे भक्ति की ऐसी धारा प्रवाहित हुई कि विद्वानों ने एकमत से इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा। इसकाल में भक्ति परक रचनाओ की प्रधानता रही। यह वह काल है जो वैचारिक समृद्धता और कला वैभव के लिए विख्यात रहा है, इस काल में हिन्दी काव्य में किसी एक दृष्टि से नही अपितु अनेंक दृष्टियों से उत्कृष्टता पायी जाती है। इसी कारण विद्वानो ने भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा है।सूर, तुलसी, कबीर, जायसी जैसे महाकवि भक्तिकाल मे ही उत्पन्न हुए । यह काल कवि रूपी रत्नो से भरा हुआ था जिन रत्नो की चमक अभी बरकरार है। अतः इस काल को स्वर्ण काल कहना उचित ही है।

भक्तिकाल का परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल के बाद आये इस युग को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है।

यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ युग है जिसको जार्ज गितयर्सन ने स्वर्णकाल श्यामसुंदर दास ने स्वर्णयुग आचार्य राम चंन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण मे कहा इस काल का उद्भव वि.स. 1375 से 1700 तक का माना गया है। इस काल में दो धारांए प्रवाहित हुई निगुर्ण धारा, सगुण धारा, निर्गुण धारा के प्रवर्तको ने निराकार भगवान की उपासना पर बल दिया और इसी के विपरीत सगुण धारा के प्रवर्तको ने साकार ईश्वर की उपासना की।

हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग

हन्दी साहित्य के भक्तिकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी है, क्योकि भक्तिकाल मे ही राष्ट्रीय भावना और सामाजिक जागरण का उदय हुआ। रुंढ़िवादी परंपरा का खंडन करने के लिए क्रांतिकारीआंदोलन छेड़ा गया, समाज में रुढ़िवादिता से बाहर आकर आधुनिकता की दिशा मे आगे बढ़ने लगें। इसी काल में महान कवियो व समाज सुधारको का उदय हुआ। इस युग में रामानंद, वल्लभाचार्य, कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, दादूदयाल, रैदास, रसखान, रहीम आदि ने देशभक्ति की लहर जगाते हुए मानवतावाद का दिव्य संदेश दिया, एवं धार्मिक भावनाओ से ओतप्रोत विभिन्न मानवतावादी काव्य रचनाओं का जन्म हुआ। अन्य काल में कवि राज्यश्रित थे, परंतु भक्तिकाल के कवियों ने राजाश्रय को स्वीकार नही किया । सभी कवियों ने स्वतंत्र रहकर काव्य सृजन किया । भक्तिकाल के कवियों ने जो रचनाएँ की वो अपने अंतःकरण के सुख के लिए की जिन्हे 'स्वान्तः सुखाय-परिजन हिताय' ' रचना कही गयीं और ये दूसरो के लिए भी कल्याणकारी सिद्ध हुई। उनके ग्रंथों मे दिए गए धर्म उपदेश, नीति के सिद्धांत, भगवत के विविध क्रियाकलाप, सभी को सदमार्ग की ओर प्रेरित करने वाले सिद्ध हुए। इस

काल में भक्ति का प्राधान्य रहा। सभी कवियों ने परमात्मा की भक्ति का संदेश दिया । नवधा भक्ति का संकेत भी इसमे मिलता है। प्रेम ज्ञान और भक्ति का सुंदर समन्वय इस युग की देन है। तुलसीदास कहते है-

ज्ञानहिं भगतहि नहिं कहु भेदा।।

इस युग मे समन्वय की भावना की भी प्रधानता रही है। कवियों ने सगुण, निगुर्ण, कर्म- भक्ति, शैव वैष्णव, राजा -प्रजा, निर्धन-धनी, विभिन्न संप्रदायो-मतो ओर विभिन्न काव्य शैलियो में सुंदर समन्यवय स्थापित किया। भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा की मुसलमानों के अत्याचार से जो भारतीय संस्कृति लुप्त सी हो गयी थी, उसको इन कवियों ने जीवन दिया। भक्तिकाल में भक्ति भावना दो रूपो में प्रस्फुटित हुई, निर्गुण और सगुण इस काल में सगुण और निर्गुण दोनों भक्ति धाराओ का विकास एक साथ चलता रहा और दोनों भक्ति धाराओं का विकास एक साथ चलता रहा और दोनो काव्य धाराओं ने इस काल में अपने चरम को प्राप्त किया। सगुण- निर्गुण दोनो ही मतों के सभी कविंयो ने गुरू के महत्व पर प्रकाशडाला है । कबीर दास ने कहा है -

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागो पाय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताय।
सतगुरू की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उधाड़िया, अनंत दिखावण हार।।

भक्तिकाल का संम्पूर्ण साहित्य संगीतात्मकता से परिपूर्ण हैं, एवं अमर साहित्य है। अमर से अभिप्राय इस साहित्य का महत्व आज भी है । जैसे तुलसीदास का श्री रामचरित मानस आज भी प्रातः स्मरणीय ग्रंथ है। कबीर के उपदेश आज भी हमे ज्ञान प्रदान करते है। जायसी और सूरदास के काव्य आज भी पाठको के हृदय में मधुरता का समावेश करते हैं। भक्तिकाल में विविध काव्य रचनाओ का विकास हुआ। भक्तिकालीन साहित्य में प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य दोनो प्रकार के काव्य का निर्माण हुआ। भक्ति की अपार धारा इस काल में ही कही भी देखी जा सकती है। भक्तिकाल के काव्य लोकमंगल के काव्य है। यह काव्य सर्व साधारण हित एवं उत्थान का काव्य है। इस काल की रचनाओ मे ब्रज एवम् अवधी भाषा का अभूतपूर्ण विकास देखने को मिलता है। भक्तिकाल में विविध काव्य रूपों का विकास हुआ। वस्तुतः काव्य रूपो की दृष्टि से भक्तिकालीन साहित्य को समानता का दर्जा दियागया अतः इन उपलब्धियों के लिए भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाना सर्वथा उचित है।

निष्कर्ष:

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि - हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को सर्वश्रेष्ठ काल कहा गया। इसके भाव पक्ष और कलापक्ष दोनो पक्षो के दृष्टिकोण से संतो का यह काल सर्वश्रेष्ठ है ही परंतु नैतिक मूल्यो, समाज सुधार और धर्म सुधार के दृष्टिकोण से भी श्रेष्ठ काल है। इस काल का साहित्य मानवतावाद की जिस भाव भूमि को तैयार करता है, वह आजतक हिन्दी साहित्यकारो के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता आ रहा है। इसकी इन्ही विशेषताओं क कारण इसे स्वर्ण काल कहना अथवा स्वर्ण युग कहना गलत नही होंगा।

राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरोधो से परिपूर्ण होते हुए भी इस काल में भक्ति की ऐसी धारा प्रवाहित हुई कि विद्वानो ने इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है।

संदर्भ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य राम चंन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. चरन सिंह।
3. स्वर्ण युग की विशेषताएँ- सरकारी गाइडर।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - नागेन्द्र।
5. भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल - आरती कुमारी ।
6. भारतीय संगीत का इतिहास - डॉ, शरच्चन्द्र श्री धर परांजये।
7. हमारे कवि और लेखक - डॉ, राजेष्वर प्रसाद चतुर्वेदी एवं राकेश ।
8. हिन्दी भाषा और साहित्य -किरण बाला ।
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास – श्याम चन्द्र कपूर।